PUSTAK VARTA - JULY-OCTOBER 2017:JULY-AUGUST 2014.qxd 3/20/2018 12:02 AM Page 37

समीक्षा

कथेतर लेखन के विविध रूपों की पहचान

■ **गणपत तेली**
युवा समीक्षक

संपर्क: द्वारा डॉ. पल्लव
393, डीडीए-सी एंड डी,
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार
बाग, दिल्ली-110088

मूर्तन शैली में काम करने वाला चित्रकार बुढ़ापे में अमूर्तन की ओर आकर्षित होता है। ग़ज़ल और गीत गाने वाला गायक प्रौढ़ावस्था में क्लासिक संगीत की ओर जाता है। भौतिक विज्ञान के विद्वान अंततः गणित को गले लगाते हैं। इसी तरह कथा साहित्य लिखने वाले एक समय बाद कथेतर साहित्य की ओर आकर्षित होते हैं। कहानी और उपन्यास लिखते-लिखते जब वे ऊब जाते हैं तब उससे पीछा छुड़ाने के लिए संस्मरण, रेखाचित्र, डायरी, पत्र आदि कथेतर शैलियों की ओर मुड़ते हैं।

-असग़र वजाहत

माधव हाड़ा द्वारा संपादित पुस्तक 'कथेतर' हिंदी में कथेतर साहित्य की विविध विधाओं की पड़ताल करते लेखों का संकलन है। हिंदी गद्य विधाओं में यूं तो कथा का आधिपत्य है, पिछले कुछ समय से कथेतर विधाएं भी चर्चा में हैं। जहां एक ओर इसे लोकप्रिय साहित्य से जोड़कर भी देखा जा सकता है, तो वहीं दूसरी ओर इसे कथा के दायरे के बाहर जाने की लेखकीय-पाठकीय प्रवृत्ति के रूप में भी चिह्नित किया जा सकता है। कथा से बाहर जाने की इस प्रवृत्ति को 'कथा से इतर' कहते हुए प्रख्यात साहित्यकार असग़र वजाहत कथेतर गद्य को रचना की प्रामाणिकता के अनुकूल मानते हैं।

यहां इस बात का उल्लेख जरूरी है कि प्रामाणिकता और यथार्थ समानार्थी नहीं हैं। कहानी और उपन्यास प्रामाणिकता से दूर हो सकते हैं लेकिन प्रामाणिकता से दूर होने का मतलब यथार्थ से दूर होना नहीं है। कहानी-उपन्यास में कल्पना का प्रयोग यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए किया जा सकता है। प्रख्यात लेखिका अरुंधति रॉय का कथन यहां उद्धृत किया जा सकता है, 'मैं कहती रहती हूं कि फिक्शन सत्य (यथार्थ) है, क्योंकि कभी-कभी यह संभव नहीं होता है कि रिपोर्ताज, तथ्याधारित रिपोर्ट और पाद-टिप्पणियों के जरिए ही यहां जो कुछ हो रहा है, उस आतंक का बयान हो पाए।.... फिक्शन में आप सृष्टि को प्रस्तुत करते हैं और जब आप नॉन-फिक्शन लिखते हैं, तो तर्क देते हैं।' अर्थात कथेतर का अभिप्राय है कि आप प्रामाणिकता के साथ रचनात्मक लेखन करते हैं और हो सकता है कि प्रामाणिकता के आग्रह में यथार्थ की अभिव्यक्ति उतनी प्रभावी ना हो।

इस किताब के आरंभिक लेख इसी बात की पड़ताल करते हैं कि क्यों हिंदी कथेतर गद्य में इधर सक्रियता आई है। स्वयं प्रकाश (गल्पेतर गद्य की माया), अजितकुमार (हिंदी और कथेतर गद्य), माधव हाड़ा (हिंदी में कथेतर गद्य), अखिलेश (अभिव्यक्ति की नई राहें), पल्लव (कथेतर का अनुसंधान) और प्रेमचंद गांधी (विकट आख्यान काल में गद्य) समय के साथ विधाओं में आए बदलावों और उनके सामाजिक संदर्भों को प्रस्तुत करते हैं।

स्वयं प्रकाश के आलेख में इस बात पर जोर है कि कथेतर विधाओं की महत्त्वपूर्ण विशेषता विधाओं का अतिक्रमण है। उनका कहना है कि- 'आधा तीतर आधा बटेर' रचनाएं पाठकों के द्वारा बहुत पसंद की गयीं। और फिर ऐसी पुस्तकें लिखने का चलन जैसा बन गया। रवीन्द्र कालिया की 'ग़ालिब छुटी शराब' और विश्वनाथ त्रिपाठी की 'नंगातलाई का गांव' से लगाकर अनिल यादव की 'यह भी कोई देस है महाराज' तक इस किस्म की दर्जनों पुस्तकें आयीं और सब की सब अत्यंत लोकप्रिय हुईं।'

ये पुस्तकें किसी एक विधा में परिभाषित नहीं की जा सकती हैं। लेकिन यह बात सिर्फ कथेतर के बारे में ही नहीं कही जा सकती हैं, बल्कि साहित्य की सभी विधाओं पर लागू होती हैं। संभवत: कथेतर विधाओं की महत्त्वपूर्ण विशेषता ही यह है कि वे कथात्मक विधाओं के अतिक्रमण से रूप ग्रहण

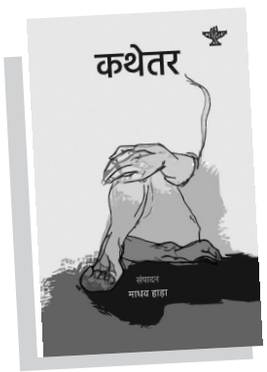

पुस्तक : कथेतर
संपादक : माधव हाड़ा
प्रकाशक : साहित्य अकादेमी,
रवींद्र भवन, 35,
फिरोजशाह मार्ग,
नई दिल्ली 110001
प्रकाशन वर्ष :2017
मूल्य: ₹ 250

करती हैं। अजितकुमार ने इस संदर्भ में अपने लेख में ठीक ही रेखांकित किया है कि 'साहित्यिक विधाएं अपनी पूर्व निर्धारित शास्त्रीय हदें तोड़ती हुई अन्य विधाओं में घुसपैठ करती रहती हैं और पुराने सांचों को नाकाफ़ी साबित करती चलती हैं। इस क्रम में नए-नए विधात्मक विन्यास विकसित होते चलते हैं और पुरानों की हदबंदी अनुपयोगी होने लगती है।'

अजितकुमार अपने लेख में हिंदी में इन विधाओं की मौजूदगी को चिह्नित करते हैं। माधव हाड़ा अपने लेख में हिंदी गद्य के उद्‌भव और विकास की ऐतिहासिक पड़ताल करते हुए कथेतर गद्य की विभिन्न विधाओं की यथास्थिति पर विचार करते हैं। कथेतर गद्य के वर्तमान परिदृश्य पर प्रो. हाड़ा का आकलन है कि 'हिंदी में कथेतर गद्य में उत्साह और प्रयोगधर्मिता का माहौल है। काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, राजेन्द्र यादव, रवीन्द्र कालिया, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजेश जोशी, अखिलेश आदि कई लोग इसमें सोत्साह सक्रिय हैं।

कथेतर गद्य विधाओं में परस्पर और कथा विधाओं के साथ संवाद और अंतर्क्रिया भी बढ़ रही है।' इसी तरह हेतु भारद्वाज का आलेख हिंदी गद्य के समक्ष आई नई चुनौतियों से रूबरू करवाता है, जबकि सूर्यप्रसाद दीक्षित का आलेख हिंदी गद्य में विकसित कतिपय नई, लेकिन गौण विधाओं की पहचान करता है।

यदि हम विधाओं की बात करें तो नर्मदा की पद-यात्रा के वृत्तांत लिख मशहूर हुए 'सौंदर्य की नदी नर्मदा' के लेखक अमृतलाल बेगड़ ने अपनी यात्राओं के आलोक में मानव जीवन में यात्रा के महत्त्व पर रोशनी डाली है। अपने आलेख 'चरैवेति चरैवेति' में यह उनका महत्त्वपूर्ण रेखांकन है कि 'मनुष्य मूलत: यायावार रहा है। आदि मानव का कोई घर नहीं था।...(बाद में) वह गृहस्थ जरूर बना लेकिन यायावरी उसके मन से गई नहीं थी। आज भी नहीं गई है।' दुर्गा प्रसाद अग्रवाल (हिंदी में यात्रा वृत्तांत) ने हिंदी में यात्रा-वृत्तांतों के लेखन का विस्तार से वर्णन करते हुए नए ढंग के आ रहे यात्रा-वृत्तांतों को इस विधा के हिंदी में बनते-बदलते रूप को उसकी परंपरा के परिप्रेक्ष्य में देखा-समझा है।

पुस्तक में संस्मरण विधा पर महत्त्वपूर्ण लेख शामिल हैं। कांतिकुमार जैन (संस्मरण का अर्थ), रंजना अरगड़े (संतो, करम की गति न्यारी) और मोहनकृष्ण बोहरा (संस्मरण के विधायी संघटन पर विचार) के लेख संस्मरण के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करते हैं। संभवत: हिंदी में कुछ दशक पहले तक कथेतर विधाओं में संस्मरण और रेखाचित्र ही सबसे ज्यादा लिखे गए थे। कांति कुमार जैन संस्मरण में प्रामाणिकता को अनिवार्य बनाने वाले पक्ष को रेखांकित करते हुए लिखते हैं कि 'संस्मरण में भले ही व्यक्तियों, घटनाओं और दृश्यों का चित्रांकन लेखक का मनोवांछित होता हो, किंतु वह स्वयं को चित्र में लाए बिना अपने गंतव्य तक पहुंच ही नहीं सकता। संस्मरण उस व्यक्ति, घटना या दृश्य का लिखा ही नहीं जा सकता जिसके साथ लेखक का व्यक्तिगत संबंध न रहा हो।'

यह न केवल प्रामाणिकता से संबद्ध है बल्कि आत्मनिष्ठता से भी है। संस्मरण ही नहीं, बल्कि कथेतर की तमाम विधाओं में आत्मनिष्ठता की भी भूमिका होती है। मोहनकृष्ण बोहरा अपने लेख में संस्मरण के विधागत ढांचे के विभिन्न रूपों और बदलावों की पड़ताल करते हैं। वे इस बात की भी पहचान करते हैं कि संस्मरण अन्य विधाओं से कहां समान-असमान है। रिपोर्ताज की चर्चा हिंदी में सीमित है, प्राय: रांगेय राघव और रेणु के रिपोर्ताज ही चर्चित हैं लेकिन हिंदी में इसकी परंपरा है, जिसका हनुमानप्रसाद शुक्ल (हिंदी में रिपोर्ताज) ने अपने आलेख में विस्तृत आकलन प्रस्तुत किया है।

ललित निबंध की विधा अब हिंदी में कमजोर पड़ती जा रही है। जब लालित्य का ही टोटा है, तो विधा में अकाल तो आएगा ही। एक समय था, जब यह विधा बुलंदियों पर थी। अरुणेश नीरन (ललित निबंध का गद्य) और श्यामसुंदर दुबे (हिंदी में ललित निबंध) के आलेख हिंदी में ललित निबंध के समृद्ध अतीत की झलक पेश करते हैं। हिंदी में इंटरव्यू का कोई अभाव नहीं है, 'मेरे साक्षात्कार' श्रृंखला इसका प्रमाण है लेकिन अभी इसे विधा के रूप में स्वीकार नहीं किया गया है।

भारती गोरे (मीडिया का गद्य) का आलेख मीडिया में लिखे जा रहे गद्य के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर रोशनी डालता है। महावीर अग्रवाल (इबादत है मेरे लिए इंटरव्यू) ने कुछ प्रमुख साहित्यकारों के साक्षात्कार के साक्ष्य देकर इस विधा के महत्त्व को रेखांकित किया है। पत्राचार अब बहुत कम हो गया है, लेकिन कुछ समय पहले तक इसका महत्त्वपूर्ण स्थान था। रामशंकर द्विवेदी (हिंदी का आरंभिक पत्र साहित्य) का आलेख हिंदी साहित्यकारों के आरंभिक पत्रों के हवाले से इसके महत्व को उजागर करता है।

कथेतर गद्य के वर्तमान उभार का सामाजिक और राजनीतिक महत्त्व है। इसे देश-दुनिया के हालात से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। अकारण नहीं है कि प्रेमचंद गांधी वर्तमान समय में कथेतर लेखन को खतरे से घिरा पाते हैं, वे लिखते हैं कि 'आज साहित्य की पूरी दुनिया में अगर कोई चीज़ खतरे से घिरी हुई है, तो वह कथेतर गद्य ही है। कारण यह कि कथेतर गद्य पाठक को कल्पना की दुनिया से बाहर निकाल कर उसे यथार्थ के सामने लाकर खड़ा कर देता है।' यही कारण भी है कि कथेतर आज के समय में लोकप्रिय हो रहा है। यह किताब इस लोकप्रियता के उभार की पड़ताल का एक मुकम्मल प्रयास तो है ही, कथेतर गद्य के विविध रंगों की पहचान भी करती है। ■